Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

बाड़ादेओ (देवता) और माहूनाग देवता का आपसी सम्बन्ध एवं इनसे सम्बन्धित देव संगीत में समानता

Dr. Kirti Garg*

Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

सार – शास्त्रों में वर्णित उत्तराखण्ड जहाँ का शैल-शिखर कैलाश पर्वतस्वर्ण, चाँदी एवं विभिन्न प्रकार के अमूल्य पदार्थों का अदभुत एवं विशाल भण्डार अपने विशाल हृदय में संजोय हुए है, जहाँ पर शीतल-निर्मल जल की नदियाँ कल-कल बहती हैं, जहाँ पर शीतल तथा उष्ण जल के विभिन्न छोटे-बड़े जलाशय व झरने बहते हैं, जहाँ पर विभिन्न प्रकार के वृक्ष अपनी मनमोहक सुगन्ध बिखेरतेहैं, जो ऋषि-मुनियों की तपोभूमि है, जहाँ पर पाँडवों ने अज्ञातवास में भ्रमण किया, जहाँ देवी-देवताओं की पूजा-उपासना घर-घर में की जाती है, जहाँ की संस्कृति अपना एक अनूठा स्थान रखती है--- यही है हमारा समृद्ध 'हिमाचल'।

---------------------------------X---------------------------------

हिमाचल एक पहाड़ी क्षेत्र है। यहाँ का प्राचीनतम् इतिहास ऋषि-मुनियों, साधु-संतों, महात्मा बुद्ध व महाभारत काल से जुड़ा हुआ है। जिसकी जानकारी हमें यहाँ के देव-उत्सवों, देव-मन्दिरों, सांस्कृतिक मेले-त्यौहारों व लोक-संगीत से प्राप्त होती है। हिमाचल प्रदेश मेले-त्यौहारों व उससे जुड़े संगीत का प्रतीक है।

इसी तरह हिमाचल के ज़िला सोलन का एक प्रसिद्ध मेला 'बाड़ी का मेला' माना जाता है। ये मेलाबाड़ी धार पर होता है। ये 'बाड़ी धार' ज़िला सोलन की अर्की तहसील की ग्राम पंचायत में स्थित है। यह घने जंगलों से सजा अत्यन्त रमणीक तथा मनमोहक स्थान है। बाड़ी-धार की प्राकृतिक छटा एवं सुन्दरता मन को लुभा लेने वाली है। इस धार पर 'बाड़ादेओ' (बाड़ा देव) का मन्दिर स्थित है। यह मन्दिर अतिप्राचीन माना जाता है। इसका सम्बन्ध पाँच पाँडवों से भी जोड़ा जाता है। कहा जाता है कि पाँण्डवों ने इस घाटी पर कुछ समय के लिए वास किया था। इस लिए इस स्थान को पाँच-पाँडव देवता के नाम से भी जाना जाता है। बाड़ी धार के मन्दिर में स्थापित देवता को ''बाड़ादेओ'' कहते हैं। जिसका अर्थ है 'बड़ा देवता' अर्थात् 'देवों का देव'।

बाड़ी धार में प्रतिवर्ष आषाड़ मास की सक्रांति को 'बाड़ादेओ' का मेला आयोजित किया जाता है। इस समय रबि की फसल किसानों के घरों में आ जाती है। यह नया अनाज सर्व प्रथम देवता को चढ़ाया जाता है। जनसाधारण में इस देवता के प्रति अटूट आस्था है। बाघल रियासत का यह सबसे बड़ा मेला माना जाता है। इस मेले के अवसर पर श्रद्धालू लोग अपनी मनोकामना पूर्ति के लिए बकरे की बलि और आभूषण आदि भेंट चढ़ाते हैं लेकिन अब पशु बलि पर रोक लगादी गई है। इस देवता का एक सहायक देवता भी है जिसे प्रसन्न करने के लिए भैंसे की बलि दी जाती थी लेकिन आज के समय में यह बलिप्रथा बंद करदी गई है।

सीमावर्ती तीन गाँवों से इस देवता की मूर्ति पालकी में रखकर रथ यात्रा के रूप में पुजारी के साथ मन्दिर में प्रविष्ट होती है। पालकी के आगे लोक-वादक लोक-वाद्यों को बजाते हुए चलते हैं। साथ मेंदेवता के पुजारी 'दिऊएं' हिंगरते हुए ''जिसे देवता की खेल'' कहते हैं, देवता के साथ चलते हैं। देवता की इस रथ यात्रा को ''पूज'' कहते हैं। इस मेले के आठ दिन पूर्व से ही इस देवता के विशेष जाति के पुजारी लोक-वादक प्रतिदिन रात्री को अपने गाँव के देव-स्थान में ''देवता का बाज'' देवता के आहवान के रूप में अनेक वाद्यों पर बजाते हैं। जिसे ''बेल'' कहा जाता है। इन वाद्यों पर बजने वाले तालों को 'बेलताल' कहते हैं। इस प्रकार इस देवता के आहवान में विभिन्न तालों का प्रयोग किया जाता है। जिसमें साढ़े ग्यारह मात्रा तक के ताल भी बजाए जाते हैं। ये ताल बेल के अन्तर्गत आते हैं। ये ताल अपने आप में विशेष महत्व रखते हैं।

इस प्रकार का देवता का आहवान देव तालों के साथ केवल इसी क्षेत्र में नही होता अपितु हिमाचल के एक और क्षेत्र ज़िला मण्डी में भी इसी प्रकार का मिलता-जुलता मेला व देव-संगीत देखने को मिलता है। इस समानता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये दोनों ही मेले महाभारत काल से जुड़े हैं। इसीलिए ऐसा प्रतीत होता है कि यही कारण है कि यहाँ के मेले और देवता के आहवान

www.ignited.in

के लिए बजाए जाने वाले देव संगीत में समानता पाई जाती है। जिस प्रकार बाड़ी का मेला पाँडवों से सम्बन्धित माना जाता है उसी प्रकार मण्डी ज़िला के करसोग क्षेत्र की माहूनाग तहसील का मेला भी महाभारत काल के राजा कर्ण से सम्बन्धित माना जाता है।

ज़िला मण्डी में माहूनाग का मन्दिर है जो कि मण्डी की तहसील करसोग में स्थित है। माहूनाग का मन्दिर राजा कर्ण को समर्पित है। कहा जाता है कि ये वह राजा कर्ण हैं जिन्होंने महाभारत काल में कौरवों के पक्ष में युद्ध किया था। जब कि वास्तव में वे पाण्डवों के भाई ही थे। कहा जाता है कि कर्ण वीर होने के साथ-साथ दानी भी था। वह दान में हमेंशा सोना दान किया करता था और इसी कारण जब कर्ण स्वर्ग लोक में गए तो उन्हें खाने को कुछ नहीं मिला, एक कि वदन्ती के अनुसार ये कहा जाता हैं कि जब वे वापिस धरती पर आए तब उन्होंने अन्न-धन के साथ-साथ चाँदी भी दान किया।

जनश्रुति के अनुसार से कहा जाता है कि माहूनाग मन्दिर में पूजी जाने वाली मूर्ति शैन्दल गाँव में मिली थी। वहाँ के बुज़ुर्गों का कहना है कि एक बार एक किसान अपने खेत में हल चला रहा था और हल चलाते-चलाते उसका हल धरती में एक जगह अटक गया। जब उसने उस हल को धरती से बाहर निकालने का प्रयास किया तो उसने देखा कि उसका हल खेत में दबी हुई एक मूर्ति में अड़ गया है और जैसे ही उस मूर्ति को मिट्टी से निकाला गया उसी समय वह मूर्ति उस स्थान को छोड़ कर 'बखारी' नामक स्थान में स्थापित हो गई। जहाँ आज माहूनाग मन्दिर स्थापित है। कहते हैं कि जब यह मूर्ति किसान को मिली तब मूर्ति ने किसान से कहा कि, 'मैं कर्ण हूँ' और यहाँ नाग के रूप में प्रकट हुआ हूँ। यदि मेरी यहाँ नाग के रूप में पूजा होगी तो यहाँ रहने वाले समस्त जनों को सुख-सुविधा प्राप्त होगी और लाभ ही लाभ होगा। तभी से कहा जाता है कि राजा कर्ण को करसोग के इस स्थान पर नागदेवता के रूप में पूजा जाने लगा और जैसा कि उपरोक्त वर्णन किया गया है कि कर्ण ने वापिस धरती पर आकर अन्न-धन्न के साथ चाँदी दान करना आरम्भ किया था। अतः कर्ण का रूप होने के कारण माहूनाग के मन्दिर में आज भी अन्न-धन्न के अतिरिक्त चाँदी की ही वस्तुएँ चढ़ाई जाती हैं। यहाँ तक की इनके सभी देव-वाद्य भी चाँदी के ही बने हुए हैं।

नाग के रूप में जब कर्ण प्रकट हुए तो उन्हें वहाँ के स्थानीय लोगों द्वारा पूजा जाने लगा। ये माहू नाग देवता दो स्थानों पर निवास करते हैं, जो कि एक मन्दिर है और एक कोठी। कभी ये कोठी में निवास करते हैं और कभी मन्दिर में।

करसोग के बुज़ुर्गों द्वारा यह भी बताया जाता है कि मण्डी के सुकेत क्षेत्र के राजा अंग्रेज़ों का विरोध करते थे। इसलिए एक दिन अंग्रेज़ सुकेत के राजा को पकड़ कर दिल्ली ले गए और वहाँ उन्हें जेल में डालकर प्रताड़ित करने लगे और करसोग के लोगों को परेशान करने लगे। जब गाँव के लोग बहुत दुखी और परेशान होने लगे तो उन्होंने नाग देवता के समक्ष प्रार्थना की कि हमें और हमारे राजा को इस दुःख से मुक्ति दिलाओ। तब नागदेवता जिन्हें राजा कर्ण का रूप कहा जाता है ने 'माऊ' (मधुमक्खी) का रूप धारण किया और अंग्रेज़ों तथा जेल के जेलर को मधुमक्खी जिसे हिमाचल में माऊ कहकर पुकारा जाता है, बन कर बहुत परेशान किया। जिससे जेलर वहाँ से भाग निकला। तब राजा छूटकर वापिस अपने स्थान पर लौट आया और नागदेवता की पूजा-अर्चना बड़ी श्रद्धा पूर्वक की और अपनी प्रजा के साथ सुख-शान्ती से रहने लगा। कहा जाता है कि तभी से यह नागदेवता 'माहूनाग' के नाम से जाना जाने लगा और साथ ही तहसील करसोग का यह गाँव माहूनाग के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

आज इस स्थान पर माहूनाग जो कि कर्ण का रूप माने जाते हैं का भव्य मेला होता है। देवता माहूनाग का देव-उत्सव बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। इस देव-उत्सव तथा मेले के शुभ अवसर पर देवता के आहवान तथा पूजा के समय अट्ठारह नगारों का वादन यहाँ के व्यावसायिक जाति के कलाकारों द्वारा किया जाता है। अनेक देव-तालों का वादन इस देवता के पुजारी वादक कलाकार इस अवसर पर करते हैं।

जिस प्रकार महाभारत में पाण्डवों और कर्ण के बीच कुंती पुत्र होने का सम्बन्ध बताया गया है उसी प्रकार का सम्बन्ध यहाँ के बाड़ादेव और करसोग के माहू नाग देवता के साथ बजने वाले देव-वाद्यों व देव-तालों का सम्बन्ध दिखाई देता है। क्योंकि जिस प्रकार का वादन यहाँ किया जाता है उसी प्रकार का वादन माहू नाग में भी होता है। जिस प्रकार की 'बेल' बाड़ी धार में बाड़ा देवता के मेले में बजाई जाती है ठीक उसी प्रकार की 'बेल' माहू नाग में माहू नाग देवता के मेले में बजाई जाती है। इसी प्रकार देव-वाद्य वादन में बहुत सी समानताएँ दोनों ही क्षेत्रों में पाई जाती हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि महाभारत में पाण्डवों और कर्ण का सम्बन्ध तो था ही लेकिन इस प्रदेश में भी दोनो के वास करने का प्रमाण भी हमें मिलता है। जब हम देखते है कि इन दोनो ही देवताओं के मेलों व उत्सवों में होने वाले संगीत-वाद्य वादन तथा उस पर बजाए जाने वाले ताल भी एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं, तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि पाण्डव एवं कर्ण जिन्हें यहाँ देवता के रूप में पूजा जाता है के बीच में एक विशेष सम्बन्ध रहा है, जो कि इन देवताओं से

सम्बन्धित मेले-उत्सवों और उनसे जुड़े संगीत में भी देखने को मिलता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

धर्मशास्त्र का इतिहास

भारतीय मिथक कोश

हिन्दू धर्मकोश

हिन्दी साहित्य कोश

Corresponding Author

Dr. Kirti Garg*

Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla